224hi04

4

लेखांकन समीकरण

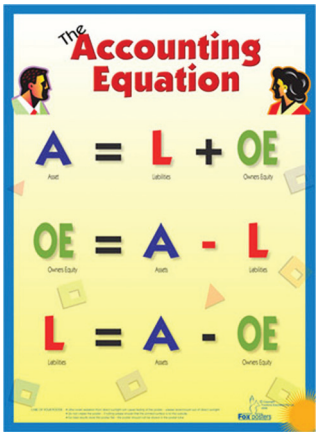

लेखांकन समीकरण

आप द्वैत पक्ष अवधारणा तथा लेखांकन की मूल शब्दावली जैसे: सम्पत्तियां, देयताएं, पूँजी, व्यय तथा आगम के बारे में पहले ही अध्ययन कर चुके हैं। इस अवधारणा के अनुसार प्रत्येक लेनदेन, व्यवसाय को दो तरह से समान राशि से प्रभावित करता है। मान लीजिए, एक व्यवसायी ₹ 3,00,000 से व्यवसाय प्रारंभ करता है। बहियों में ₹ 3,00,000 संपत्ति (रोकड़) के रूप में अंकित किए जाएँगे तथा समकक्ष धनराशि को स्वामी के प्रति देयता (पूँजी) के रूप में दर्शाया जाएगा। इस उदाहरण में आपने देखा कि संपत्तियाँ, दायित्वों के समान हैं। इसे हम गणितीय रूप में इस प्रकार प्रस्तुत कर सकते हैं : सम्पत्तियाँ = देयताएँ। इस गणितीय अभिव्यक्ति को लेखांकन समीकरण कहते है।

लेखांकन समीकरण पर प्रत्येक लेनदेन का प्रभाव इस प्रकार पड़ता है कि इसके दोनों पक्ष समान रहते हैं। अब हम विभिन्न व्यावसायिक लेनदेनों को लेंगे तथा लेखांकन समीकरण पर उनके प्रभावों को देखेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद, आप इस योग्य हो जाएँगे कि :

- लेखांकन समीकरण का अर्थ बता सकेंगे;
- लेखांकन समीकरण के महत्व की व्याख्या कर सकेंगे;
- लेखांकन समीकरण पर लेनदेन के प्रत्येक पहलु के प्रभाव को बता सकेंगे;
- निर्धारित कर सकेंगे कि संपत्तियाँ, देयताओं तथा पूँजी के योग के बराबर होती हैं और
- दिए गए लेनदेनों से लेखांकन समीकरण बना सकेंगे।

4.1 लेखांकन समीकरण

बहियों में व्यावसायिक लेनदेनों का अभिलेखन, एक मूल समीकरण पर आधारित होता है जिसे लेखांकन समीकरण कहते हैं। संपत्तियों के रूप में व्यवसाय के पास जो भी होता है वह या तो स्वामी द्वारा अथवा बाहरी व्यक्तियों द्वारा वित्त पोषित होता है। यह समीकरण एक ओर तो सम्पत्तियों तथा दूसरी ओर बाहरी व्यक्तियों तथा स्वामियों के दावों की समानता को प्रकट करती है। अत: लेखांकन समीकरण ऐसी गणितीय अभिव्यक्ति है, जो यह दर्शाती है कि एक फर्म की संपत्तियाँ तथा देयताएँ समान होती हैं। गणितीय रूप में :

टिप्पणी

सम्पत्तियाँ = देयताएँ + पूँजी

जब भी व्यवसाय में कोई संपत्ति आती है तो उसके समान देयता भी उत्पन्न होती है या किसी दूसरी सम्पत्ति में कमी होती है। व्यवसाय के पास अपनी कोई धनराशि नहीं होती। अत: हम कह सकते हैं कि व्यवसाय के पास अपना कुछ नहीं होता तथा न ही वह किसी का ऋणी होता है। साधारण शब्दों में यह कहा जा सकता है कि किसी विशिष्ट तिथि को व्यवसाय की न तो कोई देयता होती है और न ही अपनी कोई संपत्ति।

क्या अपना है, क्या उधार का है ?

आइए, लेखांकन समीकरण पर व्यावसायिक लेनदेनों के प्रभाव को देखते हैं। ये लेनदेन संपत्तियों, देयताओं अथवा पूँजी में वृद्धि या कमी करते हैं। प्रत्येक व्यवसाय की निश्चित संपत्तियाँ होती हैं। उदाहरणार्थ, सुनीता ने पूँजी के रूप में ₹ 2,00,000 लगाकर व्यवसाय प्रारंभ किया। यह कहा जा सकता है कि व्यवसाय के पास रोकड़ के रूप में संपत्ति आई।

अत: समीकरण बनेगा,

रोकड़ (संपत्ति)	=	पूँजी
₹ 2,00,000	=	₹ 2,00,000

फिर सुनीता ने ₹ 20,000 का फर्नीचर तथा ₹ 60,000 की मशीनरी खरीदी। अब संपत्तियों की स्थिति इस प्रकार है :

पूँजी	=	रोकड़	+	फर्नीचर	+	मशीनरी
2,00,000	=	1,20,000	+	20,000	+	60,000

उपरोक्त व्यावसायिक लेनदेनों से, हमने पाया कि :

पूँजी = संपत्तियाँ

अथवा

संपत्तियाँ = पूँजी

पूँजी में वृद्धि अथवा कमी के परिणामस्वरूप संबंधित संपत्तियों में वृद्धि अथवा कमी होगी। उदाहरणार्थ, सुनीता ने ₹ 50,000 अतिरिक्त पूँजी के रूप में लगाए। तब,

	पूँजी	=	रोकड़	+	फर्नीचर	+	मशीनरी
	2,00,000	=	1,20,000	+	20,000	+	60,000
	+ 50,000	=	+ 50,000				
नया समीकरण	2,50,000	=	1,70,000	+	20,000	+	60,000

प्रत्येक व्यवसाय अपनी क्रियाओं को जारी रखने के लिए बाह्य पक्षों से सामान्यत: धन उधार लेता है। अन्य शब्दों में, प्रत्येक व्यवसाय बाह्य पक्षों का ऋणी होता है। व्यवसाय की संपत्तियाँ उसके स्वामी और बाह्य पक्षों द्वारा वित्त पोषित होती हैं। बाह्य पक्षों से उधार लिया गया धन, देयता कहलाता है।

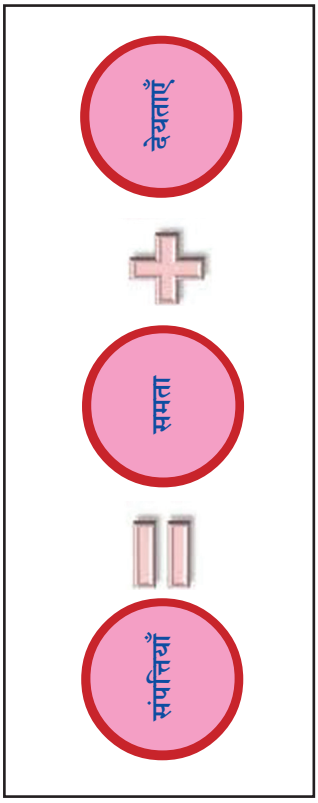

उदाहरणार्थ, सुनील ने ₹ 5,00,000 स्वयं के निवेश किए तथा ₹ 1,00,000 अजय से उधार लेकर व्यवसाय प्रारंभ किया। अत: संपत्ति (रोकड़) की राशि ₹ 6,00,000 हुई। इन दो लेनदेनों की लेखांकन समीकरण इस प्रकार होगी :

संपत्तियाँ (रोकड़)	=	पूँजी	+	देयता (अजय से ऋण)
6,00,000	=	5,00,000	+	1,00,000

वास्तव में व्यवसाय अपने स्वामियों तथा लेनदारों से वित्त प्राप्त करता है और विभिन्न संपत्तियों के रूप में अपने पास रखता है। इसे एक समीकरण के रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है :

संपत्तियाँ	=	पूँजी	+	देयताएँ	अथवा	सं० = पूँ० + दे०
देयताएँ	=	संपत्तियाँ	−	पूँजी	अथवा	दे० = सं० − पूँ०
पूँजी	=	संपत्तियाँ	−	देयताएँ	अथवा	पूँ० = सं० − दे०

आइए, कुछ और उदाहरण देखें :

राहुल ने ₹ 3,00,00 पूँजी से व्यवसाय प्रारंभ किया। उसने ₹ 2,00,000 और भी निवेश किए जो श्वेता से उधार लिए।

समीकरण होगा :

संपत्तियाँ	=	पूँजी	+	देयताएँ (श्वेता से ऋण)
₹		₹		₹
5,00,000	=	3,00,000	+	2,00,000

उसने ₹ 50,000 का माल नकद खरीदा।

	संपत्तियाँ			=	पूँजी	+	देयताएँ
	रोकड़	+	माल				
	₹		₹		₹		₹
पुरानी समीकरण	5,00,000			=	3,00,000	+	2,00,000
लेनदेन का प्रभाव	−50,000	+	50,000				
नई समीकरण	4,50,000	+	50,000	=	3,00,000	+	2,00,000

उसने श्वेता को ₹ 50,000 का भुगतान किया।

	संपत्तियाँ			=	पूँजी	+	देयताएँ
	रोकड़	+	माल				
	₹		₹		₹		₹
पुरानी समीकरण	4,50,000	+	50,000	=	3,00,000	+	2,00,000
	−50,000			=		+	−50,000
नई समीकरण	4,00,000	+	50,000	=	3,00,000	+	1,50,000

उपरोक्त उदाहरण में, व्ययों एवं आगम को विचारित नहीं किया गया। ये भी लेखांकन समीकरण को प्रभावित करते हैं। इनका प्रभाव सदा पूँजी खाते पर पड़ता है।

टिप्पणी

प्रत्येक व्यवसाय को अपने दिन-प्रतिदिन के प्रचालन में कुछ निश्चित खर्चे करने पड़ते हैं, जैसे: वेतन, किराया, बीमा प्रीमियम, डाक व्यय, मजदूरी, मशीनों की मरम्मत आदि का भुगतान। ये व्यय नियमित रूप से करने पड़ते हैं। क्योंकि सभी व्ययों का भुगतान रोकड़ के रूप में किया जाता है, इसलिए ये रोकड़ के शेष को कम करते हैं : क्योंकि शुद्ध आय, स्वामी की आय है, जो पूँजी के रूप में दर्शाई जाती है और सभी व्यय इस शुद्ध आय को कम करते हैं, इसलिए सभी व्यय पूँजी खाते में से घटाए जाते हैं। इसी प्रकार, प्रत्येक व्यवसाय को अपने दिन-प्रतिदिन के प्रचालन के दौरान कुछ निश्चित आगम भी प्राप्त होते हैं, जैसे: किराया प्राप्त हुआ, कमीशन प्राप्त हुआ आदि। क्योंकि सभी आगमों की प्राप्ति भी प्राय: रोकड़ के रूप में होती है इसलिए आगम से रोकड़ शेष बढ़ता है। आगम, व्यवसाय की शुद्ध आय को बढ़ाते हैं और इसलिए ये पूँजी खाते में जोड़ दिए जाते हैं।

अब, लेखांकन समीकरण इस प्रकार दर्शाई जा सकती है :

संपत्तियाँ	=	पूँजी	+	देयताएँ
+ आगम (रोकड़)		+ आगम		
- व्यय (रोकड़)		- व्यय		

सम्पत्तियाँ = पूँजी + देयताएँ

इस प्रकार, लेखांकन समीकरण प्रत्येक व्यवसायिक लेनदेन से प्रभावित होती है। संपत्तियों, देयताओं तथा पूँजी में किसी भी वृद्धि अथवा कमी को लेखांकन समीकरण बनाकर ज्ञात किया जा सकता है। लेखांकन समीकरण यह भी दर्शाता है कि प्रत्येक व्यावसायिक लेनदेन, लेखांकन की द्वैत पक्ष अवधारणा को संतुष्ट करता हैं यह स्थिति विवरण बनाने के लिए आधार भी प्रस्तुत करती है।

पाठगत प्रश्न 4.1

I. सही शब्दों से रिक्त स्थान भरिए :

i. लेखांकन समीकरण को _____ समीकरण भी कहते हैं।

ii. संपत्तियाँ = _____ + देयताएँ

iii. लेखांकन समीकरण, लेखांकन की _____ अवधारणा को संतुष्ट करता है।

iv. लेखांकन समीकरण _____ बनाने के लिए आधार प्रस्तुत करता है।

v. देयताएँ = _____ - पूँजी

II. बहुविकल्पीय प्रश्न

i. लेखांकन समीकरण में, संपत्तियाँ इसके समान होती है :

क) केवल पूँजी ख) पूँजी + देयताएँ

ग) पूँजी - देयताएँ घ) देयताएँ - पूँजी

ii. निम्नलिखित सूचियों में से कौन सी केवल संपत्तियों की सूची है ?
क) रोकड़, रहतिया, देनदार, मशीनरी
ख) रोकड़, लेनदार, ऋण
ग) पूँजी, फर्नीचर, देय विपत्र
घ) पूँजी, पूर्वदत्त व्यय, अदत्त व्यय

iii. निम्नलिखित सूचियों में से कौन सी केवल देयताओं की सूची है ?
क) रोकड़, रहतिया, देनदार
ख) रोकड़, ऋण, लेनदार
ग) लेनदार, ऋण, बैंक अधिविकर्ष, देय विपत्र
घ) पूर्वदत्त किराया, वेतन, अदत्त व्यय, प्राप्य विपत्र

4.2 लेखांकन समीकरण पर लेनदेनों के प्रभाव

आप जान चुके हैं कि संपत्तियाँ, देयताएँ एवं पूँजी प्रत्येक व्यवसायिक लेनदेन के तीन मूल तत्व हैं तथा इनके संबंध को लेखांकन समीकरण के रूप में व्यक्त किया जाता है, जो किसी भी समय बिन्दु पर सदा समान रहती है, किसी संपत्ति, देयता अथवा पूँजी में परिवर्तन हो सकता है, परंतु लेखांकन समीकरण के दोनों पक्ष सदा समान रहते हैं। आइए, कुछ और उदाहरण लेकर इस तथ्य का परीक्षण करें तथा देखें कि किस प्रकार ये लेनदेन, लेखांकन समीकरण को प्रभावित करते हैं।

माना कि रजनी ने अपना व्यवसाय प्रारम्भ किया और निम्नलिखित लेनदेन हुए :

1. उसने पूँजी के रूप में ₹ 5,00,000 लगाकर व्यवसाय प्रारंभ किया।

	संपत्तियाँ (रोकड़)	=	देयताएँ	+	पूँजी
लेखा समीकरण पर लेनदेन का प्रभाव	₹ 5,00,000	=	0	+	₹ 5,00,000

इस लेनदेन का अभिप्राय है रजनी ने व्यवसाय में ₹ 5,00,000 लगाए, जो एक ओर व्यवसाय के लिए पूँजी है तथा दूसरी ओर ₹ 5,00,000 की संपत्ति (रोकड़)।

2. उसने ₹ 50,000 का फर्नीचर नकद क्रय किया।

	संपत्तियाँ			=	देयताएँ	+	पूँजी
	रोकड़	+	फर्नीचर				
	₹		₹		₹		₹
पुरानी समीकरण	5,00,000			=			5,00,000
लेनदेन का प्रभाव	−50,000	+	50,000	=			0
नई समीकरण	4,50,000	+	50,000	=			5,00,000

इस लेनदेन का प्रभाव केवल संपत्तियों पर पड़ा, क्योंकि एक संपत्ति के बदले में अन्य संपत्ति क्रय की गई। इस लेनदेन में, रोकड़ के बदले में फर्नीचर क्रय किया गया है। फर्नीचर तथा

टिप्पणी

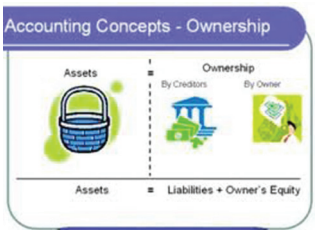

रोकड़, दोनों ही संपत्तियाँ है। अत: रोकड़ गई और ₹ 50,000 का फर्नीचर आया।

3. उसने ₹ 10,000 का माल नकद क्रय किया।

	संपत्तियाँ				=	पूँजी	+	देयताएँ
	रोकड़	+	फर्नीचर	+ माल				
	₹		₹	₹		₹		₹
पुरानी समीकरण	4,50,000	+	50,000	+ 0	=	5,00,000	+	0
लेनदेन का प्रभाव	−10,000	+	0	+ 10,000	=	0	+	0
नई समीकरण	4,40,000	+	50,000	+ 10,000	=	5,00,000	+	0

खरीदा गया माल, एक संपत्ति है तथा बदले में भुगतान किया गया रोकड़ भी एक संपत्ति है।

इस प्रकार इस लेनदेन में, जहाँ एक संपत्ति (माल) में वृद्धि हो रही है वहीं अन्य संपत्ति (रोकड़) में कमी हो रही है और पूँजी व देयताएँ अप्रभावित हैं।

4. उसने रोहित से ₹ 40,000 का माल क्रय किया।

	संपत्तियाँ				=	पूँजी	+	देयताएँ
	रोकड़	+	फर्नीचर	+ माल				लेनदार (रोहित)
	₹		₹	₹		₹		₹
पुरानी समीकरण	4,40,000	+	50,000	+ 10,000	=	5,00,000	+	0
प्रभाव	0	+	0	+ 40,000	=	0	+	40,000
नई समीकरण	4,40,000	+	50,000	+ 50,000	=	5,00,000	+	40,000

इस लेनदेन में, रोहित से उधार माल खरीदा गया है, अत: यहाँ संपत्तियों (माल) में ₹ 40,000 की वृद्धि हो रही है तथा साथ ही व्यवसाय, रोहित का ऋणी हो गया है।

किसी भी लेनदेन में, यदि नकद भुगतान के बारे में कुछ नहीं कहा गया हो और दूसरे पक्ष का नाम दिया गया हो तो वह लेनदेन सदैव उधार लेनदेन माना जाता है।

5. उसने राहुल को ₹ 20,000 का माल बेचा; माल की लागत ₹ 15,000 थी।

	संपत्तियाँ					=	पूँजी	+	देयताएँ
	रोकड़	+ फर्नीचर	+ माल	+ देनदार (राहुल)					(रोहित)
	₹	₹	₹	₹			₹		₹
पुरानी समीकरण	4,40,000	+ 50,000	+ 50,000	+ 0		=	5,00,000	+	40,000
लेनदेन का प्रभाव			− 15,000	+ 20,000		=	5,000		
नई समीकरण	4,40,000	+ 50,000	+ 35,000	+ 20,000		=	5,05,000	+	40,000

इस लेनदेन में राहुल को उधार माल बेचा गया, अत: यहाँ सम्पत्तियाँ (माल) में ₹ 15,000 की कमी हुई तथा संपत्तियों (देनदार) में ₹ 20,000 की वृद्धि हुई क्योंकि राहुल से रूपये लेने हैं। इस प्रक्रिया में स्वामी को ₹ 5,000 का लाभ हुआ जो पूँजी में जोड़ दिया गया है क्योंकि लाभ से पूँजी में वृद्धि होती है।

जब भी माल बेचने पर नकद प्राप्ति के बारे में कुछ न बताया गया हो तथा क्रेता का नाम दिया हो तो वह लेनदेन, उधार का लेनदेन माना जाता है।

6. उसने लिपिकों को ₹ 12,000 वेतन का भुगतान किया।

	संपत्तियाँ				=	पूँजी	+	देयताएँ
	रोकड़	+ फर्नीचर	+ माल	+ देनदार (राहुल)				(रोहित)
	₹	₹	₹	₹		₹		₹
पुरानी समीकरण	4,40,000	+ 50,000	+ 35,000	+ 20,000	=	5,05,000	+	40,000
लेनदेन का प्रभाव	−12,000				=	−12,000		
नई समीकरण	4,28,000	+ 50,000	+ 35,000	+ 20,000	=	4,93,000	+	40,000

इस लेनदेन में लिपिकों को वेतन भुगतान करना, व्यवसाय का व्यय है। क्योंकि वेतन का भुगतान रोकड़ के रूप में किया गया है, अत: रोकड़ के रूप में संपत्तियों में ₹ 12,000 की कमी हुई है और सभी व्यय, पूँजी को घटाते हैं इसलिए पूँजी में भी ₹ 12,000 की कमी हुई है।

7. रोहित को ₹ 20,000 का नकद भुगतान किया।

	संपत्तियाँ				=	पूँजी	+	देयताएँ
	रोकड़	+ फर्नीचर	+ माल	+ देनदार (राहुल)				(रोहित)
	₹	₹	₹	₹		₹		₹
पुरानी समीकरण	4,28,000	+ 50,000	+ 35,000	+ 20,000	=	4,93,000	+	40,000
लेनदेन का प्रभाव	−20,000				=		+	−20,000
नई समीकरण	4,08,000	+ 50,000	+ 35,000	+ 20,000	=	4,93,000	+	20,000

इस लेनदेन में लेनदार (रोहित) को ₹ 20,000 का नकद भुगतान किया गया है, अत: रोकड़ के रूप में संपत्तियों में ₹ 20,000 की कमी हुई है और साथ ही देयता (रोहित) में भी ₹ 20,000 की कमी हुई है।

उपरोक्त लेनदेनों से अब आप स्पष्टत: समझ चुके हैं कि प्रत्येक लेनदेन, लेखांकन समीकरण के दोनों पक्षों की समानता को विचलित किए बिना, किस प्रकार लेखांकन समीकरण को प्रभावित करता है।

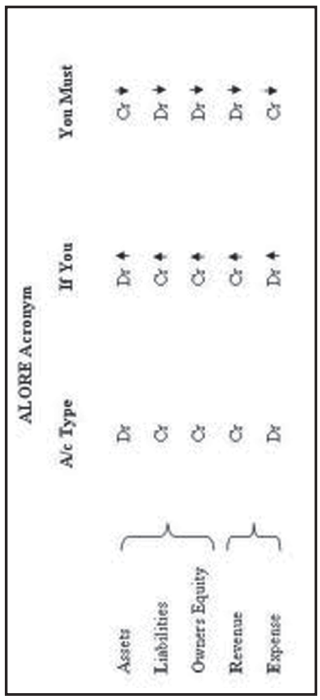

4.3 समीकरण के संयोजन

संपत्तियों, देयताओं तथा पूँजी के बीच अंत: संबंधों को विभिन्न रूपों में स्पष्ट किया जा सकता है।

एक में वृद्धि अथवा कमी के साथ ही उसमें अथवा अन्य में वृद्धि अथवा कमी होती है। आइए, इन नौ संयोजनों का उदाहरणों की सहायता से अध्ययन करें :

i. संपत्ति में वृद्धि के साथ ही पूँजी में वृद्धि
उदाहरण : रोकड़ से व्यवसाय प्रारंभ किया।

ii. संपत्ति में वृद्धि के साथ ही देयताओं में वृद्धि
उदाहरण : उधार माल खरीदा।

टिप्पणी

iii. संपत्ति में कमी के साथ ही पूँजी में कमी
उदाहरण : स्वामी ने अपने निजी उपयोग हेतु व्यवसाय से रोकड़ आहरण किया।

iv. संपत्ति में कमी के साथ ही देयता में कमी
उदाहरण : लेनदार को रोकड़ भुगतान किया।

v. संपत्तियों में वृद्धि तथा कमी
उदाहरण : फर्नीचर नकद खरीदा, माल नकद खरीदा इत्यादि।

vi. देयताओं में वृद्धि तथा कमी
उदाहरण : बैंक से ऋण लेकर लेनदारों को भुगतान किया।

vii. पूँजी में वृद्धि तथा कमी
उदाहरण : पूँजी पर ब्याज लगाया।

viii. देयताओं में वृद्धि के साथ ही पूँजी में कमी
उदाहरण : अदत्त मजदूरी, अदत्त वेतन इत्यादि।

ix. पूँजी में वृद्धि तथा देयताओं में कमी
उदाहरण : स्वामी द्वारा प्रदत्त ऋण का पूँजी में परिवर्तन।

लेखांकन समीकरण के नियम

(i) **पूँजी :** जब पूँजी में वृद्धि होती है तो यह जमा (+) की जाती है तथा जब पूँजी का एक अंश आहरण के रूप में निकाल लिया जाता है तो यह नाम (–) होती है।

(ii) **आगम :** आगम की राशि से स्वामी समता (पूँजी) में वृद्धि होती है।

(iii) **व्यय :** व्ययों की राशि से स्वामी की समता (पूँजी) में कमी होती है।

(iv) **बाह्य समता :** जब बाह्य देयता में वृद्धि होती है तो बाह्य देयता जमा (+) की जाती है।

(v) **सम्पत्तियाँ :** जब सम्पत्तियों में वृद्धि होती है तो वृद्धि की राशि से सम्पत्तियों के नाम (+) किया जाता है और यदि कोई कमी होती है तो कमी की राशि से सम्पत्ति खाते को जमा (–) किया जाता है।

(vi) **अदत्त व्ययों का प्रभाव :** देयताओं में वृद्धि तथा पूँजी में कमी।

(vii) **उपार्जित आय :** सम्पत्तियों में वृद्धि तथा पूँजी में वृद्धि।

(viii) **अग्रिम प्राप्त आय :** सम्पत्ति (रोकड़) में वृद्धि तथा देयताओं में वृद्धि।

(ix) **पूँजी पर ब्याज :** यह व्यवसाय के लिए एक व्यय है अत: लाभ की मात्रा में कमी होती है और पूँजी में से कम कर दिया जाता है। दूसरी ओर पूँजी पर ब्याज से स्वामी की पूँजी बढ़ती है तथा इसे पूँजी में जोड़ दिया जाता है। अन्तत: इस लेनदेन की पूँजी पर प्रभाव कुछ नहीं होता अत: पूँजी पूर्ववत ही रहती है।

(x) **सम्पत्तियों तथा दायित्वों की राशियाँ :** पूँजी पर ब्याज तथा आहरणों पर ब्याज से पूँजी अप्रभावित रहती है।

आइए, एक और उदाहरण लेकर लेखांकन समीकरण का पुनः अध्ययन करें :

उदाहरण 1

निम्नलिखित लेनदेनों का लेखांकन समीकरण पर प्रभाव दिखाइए :

(₹)

1.	शशि ने निम्न से व्यवसाय प्रारंभ किया :	
	रोकड़	2,00,000
	माल	1,20,000
	मशीन	80,000
2.	उसने नकद माल खरीदा	50,000
3.	उसने माल बेचा (लागत ₹ 20,000)	25,000
4.	उसने रवि से माल खरीदा	70,000
5.	उसने रवि को संपूर्ण भुगतान के रूप में रोकड़ भुगतान किया	69,000
6.	उसने विकास को माल बेचा (लागत ₹ 54,000)	60,000
7.	उसने विकास से भुगतान प्राप्त किया तथा उसे ₹ 2,000 की छूट दी	58,000
8.	उसके द्वारा वेतन भुगतान किया गया	40,000
9.	अदत्त किराया	4,000
10.	पूर्वदत्त बीमा	1,000
11.	उसके द्वारा कमीशन प्राप्त की गई	3,000
12.	उसके द्वारा निजी उपयोग हेतु धनराशि आहरित की गई	30,000
13.	उसके द्वारा निवेशित पूँजी पर ब्याज लगाया गया	2,000

टिप्पणी

क्र.स.	लेनदेन	रोकड़	+	माल	+	मशीन	+	देनदार	+	पूर्वदत्त व्यय	=	लेनदार	+	अदत्त व्यय	+	पूँजी
		संपत्तिया									=	देयताएँ			+	पूँजी
		₹		₹		₹		₹		₹		₹		₹		₹
1.	व्यवसाय प्रारंभ किया	2,00,000	+	1,20,000	+	80,000	+	0	+	0	=	0	+	0		4,00,000
	रोकड़ ₹ 2,00,000															
	माल ₹ 1,20,000															
	मशीन ₹ 80,000															
2.	₹ 50,000 का माल खरीदा	−50,000	+	50,000	+	0	+	0	+	0	=	0	+	0	+	0
	नई समीकरण	1,50,000	+	1,70,000	+	80,000	+	0	+	0	=	0		0	+	4,00,000
3.	₹ 25,000 का माल बेचा															
	(लागत ₹ 20,000)	25,000	+	−20,000	+	0	+	0	+	0	=	0	+	0	+	5,000
	नई समीकरण	1,75,000	+	1,50,000	+	80,000	+	0	+	0	=	0	+	0	+	4,05,000
4.	रवि से ₹ 70,000 का माल															
	खरीदा	0	+	70,000	+	0	+	0	+	0	=	70,000	+	0	+	0
	नई समीकरण	1,75,000	+	2,20,000	+	80,000	+	0	+	0	=	70,000	+	0	+	4,05,000
5.	रवि को ₹ 69,000 पूर्ण															
	भुगतान स्वरूप दिए	−69,000	+	0	+	0	+	0	+	0	=	−70,000	+	0	+	1,000
	नई समीकरण	1,06,000	+	2,20,000	+	80,000	+	0	+	0	=	0	+	0	+	4,06,000
6.	₹ 54,000 की लागत का															
	माल ₹ 60,000 में विकास															
	को बेचा	0	+	−54,000	+	0	+	60,000	+	0	=	0	+	0	+	6,000
	नई समीकरण	1,06,000	+	1,66,000	+	80,000	+	60,000	+	0	=	0	+	0	+	4,12,000

7.	विकास से रूपये प्राप्त किए																	
	और उसे ₹ 2,000 की छूट दी	58,000	+	0	+	0	+	60,000	+	0	=	0	+	0	+	−2,000		
	नई समीकरण	1,64,000	+	1,66,000	+	80,000	+	0	+	0	=	0	+	0	+	4,10,000		
8.	₹ 40,000 वेतन भुगतान किया	−40,000	+	0	+	0	+	0	+	0	=	0	+	0	+	−40,000		
	नई समीकरण	1,24,000	+	1,66,000	+	80,000	+	0	+	0	=	0	+	0	+	3,70,000		
9.	अदत्त किराया ₹ 4,000	0	+	0	+	0	+	0	+	0	=	0	+	4,000	+	−4,000		
	नई समीकरण	1,24,000	+	1,66,000	+	80,000	+	0	+	0	=	0	+	4,000	+	3,66,000		
10.	पूर्वदत्त बीमा ₹ 1,000	−1,000	+	0	+	0	+	0	+	1,000	=	0	+	0	+	0		
	नई समीकरण	1,23,000	+	1,66,000	+	80,000	+	0	+	1,000	=	0	+	4,000	+	3,66,000		
11.	₹ 3,000 कमीशन प्राप्त की	3,000	+	0	+	0	+	0	+	0	=	0	+	0	+	3,000		
	नई समीकरण	1,26,000	+	1,66,000	+	80,000	+	0	+	1,000	=	0	+	4,000	+	3,69,000		
12.	₹ 30,000 आहरित किए	−30,000	+	0	+	0	+	0	+	0	=	0	+	0	+	−30,000		
	नई समीकरण	96,000	+	1,66,000	+	80,000	+	0	+	1,000	=	0	+	4,000	+	3,39,000		
13.	पूँजी पर ब्याज ₹ 2,000	0	+	0	+	0	+	0	+	0	=	0	+	0	+	−2,000		
		0	+	0	+	0	+	0	+	0	=	0	+	0	+	2,000		
	नई समीकरण	96,000	+	1,66,000	+	80,000	+	0	+	1,000	=	0	+	4,000	+	3,39,000		
	कुल					3,43,000					=			3,43,000				

पाठगत प्रश्न 4.2

बहु विकल्पीय प्रश्न :

i. ऋतु से ₹ 60,000 का माल खरीदा। लेखांकन समीकरण पर इस लेनदेन का क्या प्रभाव होगा ?

क) संपत्तियों में वृद्धि तथा देयता वृद्धि
ख) संपत्ति में वृद्धि तथा कमी
ग) देयता में वृद्धि तथा कमी
घ) संपत्ति में कमी तथा देयता में कमी

ii. अदत्त किराया ₹ 2,000 है। लेखांकन समीकरण पर इस लेनदेन का क्या प्रभाव होगा?

क) संपत्ति में वृद्धि तथा कमी
ख) देयता में वृद्धि तथा कमी
ग) देयता में वृद्धि तथा संपत्ति में कमी
घ) देयता में वृद्धि तथा पूँजी में कमी

iii. आहरण पर ब्याज ₹ 5,000 है। लेखांकन समीकरण पर इस लेनदेन का क्या प्रभाव होगा?

क) संपत्ति में वृद्धि तथा कमी
ख) देयता में वृद्धि तथा कमी
ग) पूँजी में वृद्धि तथा कमी
घ) संपत्ति में वृद्धि तथा देयता में वृद्धि

आपने क्या सीखा

- व्यवसायिक लेनदेन का अभिप्राय है वस्तुओं तथा/अथवा सेवाओं का मूल्य के बदले विनिमय अथवा व्यवसाय में की जाने वाली कोई अन्य वित्तीय क्रिया।
- प्रत्येक व्यवसायिक लेनदेन, द्वैत पक्षीय अवधारणा को संतुष्ट करता है।
- प्रत्येक व्यवसायिक लेनदेन, लेखांकन समीकरण के आधार पर अभिलेखित किया जाता है।
- लेखांकन समीकरण एक गणितीय अभिव्यक्ति है जो एक ओर संपत्तियों तथा दूसरी ओर पूँजी एवं देयताओं के योग की समानता को दर्शाता है।
- संपत्तियाँ = पूँजी + देयताएँ (सं० = पूँ० + दे०)
- लेखांकन समीकरण पर प्रत्येक व्यवसायिक लेनदेन का प्रभाव पड़ता है।
- व्यवसाय का अपना कुछ नहीं है तथा न ही वह किसी का ऋणी है। कुछ उसके स्वामित्व में है तथा कुछ अन्य उसके ऋणी हैं।
- किसी भी परिस्थिति में लेखांकन समीकरण की समानता पूर्ववत रहती है।
- व्ययों एवं आगम का प्रभाव सदैव पूँजी खाते पर पड़ता है।
- लेखांकन समीकरण के किसी तत्व में होने वाली वृद्धि अथवा कमी के साथ ही उसमें या किसी अन्य तत्व में वृद्धि अथवा कमी होती है।

पाठांत प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 1-10 शब्दों में दीजिए :
   i. यदि एक फर्म कुछ धनराशि उधार लेती है, तो इसका लेखांकन समीकरण पर क्या प्रभाव होगा ?
   ii. दो लेनदेनों के उदाहरण दीजिए- एक का प्रभाव केवल संपत्तियों पर तथा दूसरे का केवल देयताओं पर पड़ता हो।
   iii. अग्रिम प्राप्त आय को लेखांकन समीकरण में आप कैसे दर्शाएँगे?
   iv. यदि ₹ 8,000 की लागत का माल ₹ 8,500 में बेचा जाए तो पूँजी पर क्या प्रभाव पड़ेगा?
2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 30-50 शब्दों में दीजिए :
   i. लेखांकन समीकरण क्या है?
   ii. लेखांकन समीकरण में आगम तथा व्ययों का क्या व्यवहार किया जाता है?
3. ''लेखांकन समीकरण सभी परिस्थितियों में समान रहती है।'' कुछ उदाहरणों की सहायता से इस कथन का सत्यापन लगभग 100-150 शब्दों में कीजिए।
4. निम्नलिखित के आधार पर लेखांकन समीकरण तैयार कीजिए :
   i. करण ने ₹ 1,60,000 रोकड़ से व्यवसाय प्रारंभ किया।
   ii. उसने ₹ 16,000 का फर्नीचर खरीदा।
   iii. उसने ₹ 1,600 किराए का भुगतान किया।
   iv. उसने ₹ 24,000 का माल उधार खरीदा।
   v. उसने ₹ 16,000 की लागत का माल ₹ 40,000 में नकद बेचा।
5. अक्षय ने निम्नलिखित लेनदेन किए :

		₹
i.	रोकड़ से व्यवसाय प्रारंभ किया	2,50,000
ii.	नकद माल खरीदा	1,00,000
iii.	वेतन का भुगतान किया	2,500
iv.	1,00,000 की लागत का माल बेचा	1,50,000
v.	अदत्त किराया	500
vi.	माल उधार खरीदा	1,50,000
vii.	मशीनें उधार खरीदी	25,000
viii.	निजी उपयोग हेतु मोटर साइकिल खरीदी	25,000
ix.	भवन नकद खरीदा	1,00,000

लेखांकन समीकरण का उपयोग करते हुए संपत्तियों, देयताओं तथा पूँजी पर उपरोक्त लेनदेनों के प्रभाव को दर्शाइए।

6. निम्नलिखित लेनदेनों के आधार पर लेखांकन समीकरण दर्शाइए :

		₹
i.	शिवम् ने व्यवसाय प्रारंभ किया :	
	रोकड़	5,00,000
	माल	2,00,000
ii.	उसने मशीनें नकद खरीदी	2,50,000
iii.	उसने रमेश से माल खरीदा	1,00,000
iv.	उसने सुरेश को 25,000 की लागत का माल बेचा	30,000
v.	बीमा प्रीमियम भुगतान किया	5,000
vi.	अदत्त वेतन	10,000
vii.	मशीनों पर ह्रास लगाया	25,000
viii.	पूँजी पर ब्याज लगाया	3,000
ix.	निजी उपयोग हेतु धनराशि आहरित की	18,000
x.	आहरण पर ब्याज लगाया	900
xi.	अग्रिम किराया प्राप्त	1,500
xii.	रमेश को रोकड़ भुगतान किया	50,000
xiii.	सुरेश से रोकड़ प्राप्त किया	15,000

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

4.1 **I.** (i) स्थिति विवरण (ii) पूँजी (iii) द्वैत पक्षीय
(iv) स्थिति विवरण (v) संपत्तियाँ

II. (i) ख (ii) क (iii) ग

4.2 (i) क (ii) घ (iii) ग

आपके लिए क्रियाकलाप

- विभिन्न व्यवसायिक संगठनों से पूछिए तथा लेनदेनों के लेखों के रखरखाव की विभिन्न विधियों की सूची बनाइए।